JULY TO SEPTEMBER 2016-17

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	धान	राजेश्वरी	धान की कतार बोनी में फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
2.	सोयाबीन	जे.एस.95-60	रेज्ड बेड प्लांटर से सोयाबीन की बुवाई का आकलन	1.0	05
3.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	सोयाबीन में खरपतवार नाशियों से खरपतवार प्रबंधन का आकलन	0.8	04
4.	प्याज	भीमा डार्क रेड	उन्नत किस्म का आकलन	0.4	05
5.	बैगन	छत्तीसगढ़ सफेद बैगन -1	उन्नत किस्म का आकलन	0.4	04
6.	धान	कंचन - 64	धान में आभासी कंण्डवा रोग नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.4	04
7.	धान	स्वर्णा	धान में झुलसा रोग नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.4	04
8.	मछली	रोहू, कतला, मृगल	ग्रामीण तालाब में मत्स्य बीज उत्पादन का आकलन	0.5	04
योग				4.7	30

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से सोयाबीन की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	13
2.	धान	राजेश्वरी	धान सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से धान की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	13
3.	धान	राजेश्वरी	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
4.	सोयाबीन	जे. एस. 97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
5.	सेम	छत्तीसगढ़ सेम -1	छत्तीसगढ़ सेम - 1	0.4	05
6.	धान	पूसा बासमती	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
7.	गाय	देशी	नीम एवं करंज तेल का बाह्य परजीवि नाशक के रूप में प्रभाव का प्रदर्शन	12 पशु	12
योग				25.4	79

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	अरहर	एल.आर.जी.- 41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	8.0	20
2.	उड़द	टी.ए.यू. - 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	4.0	10
योग				12	30

समूह फसल प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	अरहर	एल.आर.जी.- 41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50
2.	मूंग	HUM - 16 SML - 668	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50
योग				40	100

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	80
2.	पौध संरक्षण	4	1	70
3.	उद्यानिकी	4	1	60
4.	मृदा विज्ञान	4	1	60
5.	पशुपालन	4	1	60
6.	मत्स्यकी	4	1	60
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	60
योग		28	7	430

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	25	30
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	200	200
लाईफ योजना अंतर्गत मनरेगा में 100 दिन काम कर चुके कृषको को प्रशिक्षण	01 (6 दिवसीय)	30
पशु स्वास्थ्य शिविर	01	50
योग	227	310

बीजोत्पादन कार्यक्रम
(कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में खरीफ 2016 -17 में बीज उत्पादन)

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)
1.	अरहर	आशा	प्रमाणित	2.0
2.	सोयाबीन	जे. एस. 95-60	आधार	2.0
3.	सोयाबीन	जे. एस. 97 - 52	आधार	7.0
योग				11.0

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....
....
....

उन्नत कृषि

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

समृद्ध किसान

अंक-26 प्रैमासिक पत्रिका, जुलाई,अगस्त, सितम्बर 2016 वर्ष-9

संपादक मंडल
संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएें, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)
प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
अटारी
जोन-7 (भा.कृ.अनु.परि.)
जबलपुर
प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन
सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी
श्रीमती प्रमिला कांत
उद्यानिकी
श्री बी.एस.परिहार
सस्य विज्ञान
कु.मनीषा खापर्डे
मात्स्यिकी
श्री वाई.के. कौशिक
कार्यक्रम सहायक
श्रीमती स्वाती शर्मा
कार्यक्रम सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

मासिक कार्यशाला का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 02.04.2016 को मासिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिले के सभी विकासखंडो के 20 वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारियों ने भाग लिया व समसामयिक समस्या पर चर्चा कर वैज्ञानिकों द्वारा निदान बताया गया।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर जागरूकता कार्यक्रम सह कृषक सम्मेलन का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 05.04.2016 को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर जागरूकता कार्यक्रम सह कृषक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद माननीय श्री अभिषेक सिंह, विशिष्ट अतिथि पंडरिया विधायक माननीय श्री मोतीराम चन्द्रवंशी,कवर्धा विधायक श्री अशोक साहू, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री संतोष पटेल, मन्नू राम चन्द्रवंशी, कलक्टर धनंजय देवांगन, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के कार्यक्रम समन्वयक, वैज्ञानिक गण, कृषि महाविद्यालय एवं मात्सियकी महाविद्यालय के प्राध्यापक गण, कृषि विभाग के अधिकारी गण एवं बड़ी संख्या में कृषक उपस्थित थे।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 9 वीं बैठक सम्पन्न

कृषि विज्ञान केन्द्र,राजनांदगांव एवं कवर्धा द्वारा दिनांक 16.06.2016 को राजनांदगांव के शहीद वीरनाराण भवन कौरिन भांठा में वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 9 वीं बैठक आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. एम.पी. ठाकुर, निदेशक विस्तार सेवाएं,इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर, विशिष्ट अतिथि श्री बी.डी. साहू, डॉ.आर.एन. गांगुली, अधिष्ठाता, उद्यानिकी महाविद्यालय, राजनांदगांव, श्री ए.के.बंजारा, उपसंचालक कृषि, कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक एवं वैज्ञानिक गण, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, मत्स्य पालन विभाग के अधिकारी गण एवं दोनों जिले के सम्मानीय वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्यगण एवं प्रगतिशील कृषक उपस्थित रहे।

JULY TO SEPTEMBER 2016-17

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

किसान मेला सह कृषक संगोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 16.06.2016 को ग्राम - कोयलारी जिला - मुंगेली में किसान मेला सह कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री तोखन लाल साहू, संसदीय सचिव, छ.ग.शासन, डॉ. के.के. साहू, प्रमुख वैज्ञानिक, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के कार्यक्रम समन्वयक, वैज्ञानिक एवं 500 से अधिक कृषकों की सहभागिता रही।

कृषक संगोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रशिक्षण कक्ष में कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 21 जून को आयोजित किया गया। इसमें सहसपुर लोहारा ब्लाक के 35 कृषकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कृषको को खरीफ फसलो की तैयारी एवं मुख्य समस्याओं पर वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी जानकारी प्रदान की गई।

सेवारत कर्मियों के लिए प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 04.06.2016 को सेवारत कर्मियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में कबीरधाम एवं बेमेतरा जिले के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, ग्रामीण कृषि विकास अधिकारीयों को मिनी स्वाइल टेस्टिंग किट से मृदा परिक्षण करना सिखाया गया।

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	धान	राजेश्वरी	धान की कतार बोनी से फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
योग				0.8	04

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	सेम	छत्तीसगढ़ सेम 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	5
2.	धान	राजेश्वरी	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
3.	धान	राजेश्वरी	धान सीड कमफर्टीलाइजर ड्रील से धान की कतार बोनी का प्रदर्शन	5.0	12
4.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
योग				15.4	41

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मत्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	10	20
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	100	100
योग	110	120

माननीय सांसद महोदय द्वारा आई.एफ.एस. मॉडल का अवलोकन

माननीय सांसद महोदय द्वारा इंदिरा किसान मितान पत्रिका का विमोचन

सामयिक सलाह -2016

क्या करें.....? कब करें.....? क्यों करें.....?

जुलाई

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- धान की रोपाई कतार में करें। इससे कृषि क्रियाओं को रोकने में सहायता होती है तथा पौध संख्या पर्याप्त रहती है।
- रोपा धान में नींदानाशक अंकुरण पूर्ण पाइरेजोसल्फूरॉन या ऑक्सिडायर्जिल या एनीलोफास या ब्यूराक्लोर या पेन्डी मेथेलिन का छिड़काव करें।
- खरपतवार नाशी दवा का छिड़काव फ्लैटफैन नोजल द्वारा करें।
- सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु अंकुरण पूर्व एलाक्लोर या पेन्डीमेथिलिन या मैट्रीबुजिन का छिड़काव अनुशंसित मात्रा में करें।
- उकठा ग्रसित क्षेत्रों में अरहर के साथ ज्वार की मिलवाँ खेती करने से अरहर में उकठा (विल्ट) रोग कम लगता है।

उद्यानिकी

- नए फल वृक्षों को लगाने का कार्य आरंभ करें।
- केले के पौधे की रोपाई का कार्य आरंभ करें।
- सब्जियों के तैयार पौधो का रोपण करें।
- सेवंती के नए सकर्स से कटिंग कर पौध तैयार करें।
- गेंदा के पौध तैयार करें।
- नर्सरी तैयार होने के अरांत टमाटर, मिर्च, बैगन एवं फूलगोभी की रोपाई करें।
- अदरक, हल्दी, भिण्डी एवं बरबट्टी की निराई गुड़ाई एवं पानी न गिरने पर सिंचाई की समुचित व्यवस्था करें।

पशुपालन -

- वर्षाजनित रोंगों से बचाव के उपाय नहीं भूलें। अंत: परजीवी व कृमि नाशक घोल या दवा देने का समय भी यही है।
- संक्रामक रोगो से बचाव हेतु टीकाकरण अवश्य करायें।
- पशु ब्याने के दो घण्टे के अंदर नवजात बछड़े व बछड़ियों को पीयुष अवश्य पिलायें।

अगस्त

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- मक्का की पत्तियों में झुलसन शुरू होने पर मेन्कोजेब/क्लोरोथेलिनिल ताम्रयुक्त फफूंदनाशक दवा का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल में 2 बार करना चाहिए।
- धान के खेत में लगातार पानी भरकर न रखें।
- रोपा लगाने के पूर्व धान के थरहा की जड़ो को क्लोरपायरीफास 20 ई.सी.दवा का 1 मि.ली. की पानी तथा 2 किलो यूरिया मिलाकर 3-4 घण्टे डुबोकर रोपा लगाएँ या नर्सरी खेत में कार्बो यूरॉन 33 किलो/हे.की दर से थरहा निकालने के 4 दिन पहले देवें।
- देर हो जाने के कारण यदि धान की रोपाई इस माह करनी पड़ रही है तो पौधे की दूरी कम रखें व 3-4 पौधों का उपयोग करें।
- खेत में हरी काई का प्रकोप दिखे तो पानी को निकाले।
- खेत में जिस जगह से पानी अन्दर जाता है, वहाँ कॉपर सल्फेट को पोटली में बांधकर रखें।
- अरहर में पत्ती मोड़क एवं भृंग इत्यादि कीटों के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफास 50 ई.सी.1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- धान में यूरिया का छिड़काव करने के पूर्व खेत में पानी की मात्रा कम कर देवें।

उद्यानिकी

- अमरूद, नीबू एवं अन्य वृक्षों में गूटी बांधे तथा पिछले माह बांधी गई गुटी को मातृ पौधों से अलग कर प्लास्टिक थैली में रोपण करें।
- डहेलिया के कंद से निकले नवीन पौधों को 4 - 6 इंच की कटिंग कर नए पौधे तैयार करें।
- खरीफ प्यान को खेत में रोपाई करें।
- सेमी, बरबट्टी को खेत में लगावें।

पशुपालन

- बरसात के मौसम में पशु घरों को सुखा रखें एवं मक्खी रहित करने के लिए नीलगिरि या निम्बू घास के तेल का छिड़काव करें।
- पशुओं को खनिज मिश्रण 30-50 ग्राम प्रतिदिन दें। जिससे पशु की दूध उत्पादन और शारीरिक क्षमता बनी रहें।

सितम्बर

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- तना छोदक के लिए फेरोमोन ट्रेप उपयोग करें या लाइट ट्रेप द्वारा भी व्यस्कों की संख्या को कम किया जा सकता है।
- भूरा माहो के नियमित प्रकोप वाले स्थानों पर फोरट का इस्तेमाल न करें।
- कीट प्रकोप की तीव्रता होने पर इमिडाक्लोपिड 125 मि.ली. या इथीप्रोल + इमिडाक्लोप्रिड 150 मि.ली. दवा का उपयोग करें।
- धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राइसाइक्लोजोल (0.6 ग्रा./ली.पानी) आइलोप्रोथि न्योलेन (1 मि.ली./ली.पानी)/ टेबुकोनाजोल (1.5 मि.ली. /ली.पानी) में से किसी एक फफूंद नाशक दवा का छिड़काव दोपहर तीन बजे के बाद करें तो रोग का प्रभावी नियंत्रण होना।
- जीवाणु जनित झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो तो खेत से पानी निकालकर 3-4 दिन तक खुला रखें तथा 25 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें।

उद्यानिकी

- अदरक एवं हल्दी में मिट्टी चढ़ाए।
- बेलदार एवं लतावाली सब्जियों में तुरंत सहारा देने का कार्य करें एवं मिट्टी चढ़ाएँ।
- सेवंती, डहेलिया के तैयार पौधों को खेत में लगाएँ।

पशुपालन

- चारे का पर्याप्त और उपयुक्त भण्डारण सूखे व ऊँचे स्थान पर करें।
- दुग्ध ज्वर से दुधारू पशुओं को बचाने के लिए गाभिन अवस्था में उचित मात्रा में सूर्य की रोशनी मिलनी चाहिए। साथ ही विटामिन ई व सिलेनियम का टीका प्रसव उपरांत पशुचिकित्सक की सलाह से लगवाना चाहिए।
- पानी के साथ 5-10 ग्राम चूना मिलाकर या कैल्शियम फास्फेरस का घोल 70 से 100 मि.ली. प्रतिदिन भी दिया जा सकता है।